संगीताचार्य
कथ्थक-नृत्य
(क्रियात्मक तथा शास्त्र)

नियम-१ संगीत अलंकार (कथ्थक नृत्य) अथवा समकक्ष उपाधि धारण करने वाले विद्यार्थी संगीताचार्य (कथ्थक नृत्य) परीक्षा दे सकते हैं। नृत्य की तैयारी में कम से कम दो वर्ष का अभ्यास तथा किसी विद्यालय में कम से कम एक वर्ष के अध्यापन का अनुभव होना अनिवार्य है। इसके अतिरीक्त विद्यार्थी को किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय का स्नातक होना आवश्यक है।

नियम-२ विद्यार्थी को संगीत अलंकार (कथ्थक नृत्य) के निर्धारीत पाठ्यक्रम के क्रियात्मक एवं शास्त्रीय पक्ष के पूर्ण ज्ञान के साथ साथ सभी प्रचलित एवं अप्रचलित तालों में नृत्य प्रस्तुत करने की क्षमता आवश्यक है।

नियम-३ संगीताचार्य (कथ्थक नृत्य) के विद्यार्थी को सभाओं में उच्च कोटि की नृत्य कला के प्रदर्शन की क्षमता रखना आवश्यक है।

नियम-४ संगीताचार्य की परीक्षा निम्न ३ भागों में विभक्त है:

(अ)	निबंध	अंक 100
(ब)	मौखिक (क्रियात्मक)	अंक 200
(स)	मंच प्रदर्शन	अंक 200
	कुल अंक	500

Scanned by CamScanner

(अ) निबंध–अंक 100

1. निम्नलिखित शीर्षकों में से परीक्षार्थी अपनी इच्छानुसार कोई भी शीर्षक चुन सकता है, किन्तु निबंध ऐसा होना चाहिए कि शीर्षक पर खोज कार्य दिखाई दे। निबंध 5000 शब्दों का होगा।
2. परीक्षार्थी निबंध में अपनी शैली का संक्षिप्त विश्लेषण एवं मंच प्रदर्शन में अपनी शैली की सफलता के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट करेगा।
3. परीक्षार्थी को अपने द्वारा प्रस्तुत निबंध के विषय में 15 मिनट में एक भाषण परीक्षकों के सन्मुख देना होगा।

निबंध सूचि

1) कथ्थक नृत्य की वर्णमाला, अर्थ और उपयोगिता।
2) कथ्थक नृत्य का उद्‌गम, एवं विकास।
3) कथ्थक नृत्य में, नृत, नृत्य और नाट्य की महत्ता।
4) प्राचीन मध्य एवं आधुनिक काल तक नृत्य का उद्‌भव और विकास।
5) मूर्ति – वास्तु, चित्र कलाओं का नृत्य से संबंध, प्रभाव एवं उपयोगिता।
6) गायन – वादन एवं ताल का नृत्य में स्थान।
7) नृत्य और रस।
8) नायक – नायिका भेद और कथ्थक नृत्य।
9) कथ्थक नृत्य में मुद्राएँ।
10) नृत्य और रंगमंच।
11) लय – ताल का नृत्य में स्थान।
12) नृत्य समाज को सुधारने का सशक्त माध्यम।
13) नृत्य और घराने।
14) कथ्थक नृत्य में ताण्डव और लास्य का महत्त्व।
15) रास एवं कथ्थक नृत्य।
16) नृत्य संगीत का प्राण है।
17) कथ्थक नृत्य के समुचित विकास के हेतु उपाय।
18) कथ्थक नृत्य में बैले एवं आपेरा।
19) अपनी नृत्य कला के अतिरिक्त नर्तक / नर्तकी को और किन कलाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है और क्यों ?
20) नृत्य ही सत्य – शिव – एवं सुन्दर है।

Scanned by CamScanner

'ब' मौखिक परीक्षा : अंक 200

मौखिक परीक्षा में परीक्षक परीक्षार्थी के द्वारा प्रस्तुत नृत्य प्रदर्शन एवं उसकी शैली संबंधी ज्ञान की सूक्ष्म जाँच करेगा। प्रश्नों का आधार उदाहरण के लिए निम्नलिखित है।

1) अलंकार (कथ्थक नृत्य) के पाठ्यक्रम तक सभी तालों में विद्वता पूर्ण नृत्य करने की क्षमता तथा कुछ अप्रचलित तालों में भी नृत्य करने की क्षमता।
2) कथ्थक नृत्य के विभिन्न घरानों की शैलियों की विशेषताएँ और उनमें नृत्य के बोलों के निकास का ज्ञान।
3) एकल, युगल एवं समूह नृत्य रचने की क्षमता।
4) कथ्थक नृत्य में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के बालों / परनों और कवित्तों को रचने की क्षमता।
5) सभी प्रकार के नायक / नायिकाओं के चरित्र चित्रण की क्षमता।
6) सभी रसों की अभिव्यक्ति करने की क्षमता।
7) कथ्थक नृत्य के आधार पर बैले / आपेरा रचने की क्षमता।
8) तत्कार में विभिन्न लयकारी करने की क्षमता।
9) ठुमरी / भजन गाते हुए नृत्य करके भाव अभिव्यक्त करने की क्षमता।
10) तबला एवं मृदंग में बजाये गये बोलों का नृत्य करके जवाब देने की क्षमता।

'क' मंच प्रदर्शन : अंक 200

मंच प्रदर्शन की दो बैठकें होंगी, जो प्रत्येक एक - घंटे की होगी। पहले मंच प्रदर्शन में परीक्षार्थी अपनी इच्छा की किसी भा ताल मे 45 मिनट नृत्य प्रस्तुत करेगा। और 15 मिनट में ततकार की लय - बांट प्रस्तुत करेगा।

मंच प्रदर्शन की दूसरी बैठक में परीक्षार्थी 30 मिनट में गत भाव / कवित इत्यादि प्रस्तुत करेगा और शेष 30 मिनट में ठुमरी / भजन पद पर नृत्य प्रस्तुत करेगा।

Scanned by CamScanner